



Communism is like a forest fire; it goes on burning and consuming anything and everything that comes in its way – **B. R. Ambedkar**

संपादक की कलम से

आर्थिक पतन बनाम सामाजिक विभाजन

सभ्यता के समय से ही सत्ताधारी और विपक्षी राजनीतिक दलों के बीच लड़ाई देखी जाती रही है। सभी राजनीतिक दलों का उद्देश्य किसी भी तरह सत्ता पर कब्ज़ा करना होता है। जर्मनी में हिटलर, रूस में स्टालिन, इटली में मुसोलिनी ने अपनी राजनीतिक सत्ता हासिल करने और उसे बनाए रखने के लिए लाखों लोगों को दबाकर और मारकर देश पर शासन किया।

तानाशाही शासन में सबसे ज़्यादा नुकसान जनता को ही होता है। जो लोग राजनीतिक सत्ता का आनंद लेते हैं और धन पर कब्ज़ा करते हैं, वे देश की सबसे कीमती संपत्ति को बरबाद कर देते हैं। बरबादी के दुष्परिणामों के रूप में आने वाली पीढ़ी को आर्थिक रूप से नुकसान उठाना पड़ता है। युवाओं के सपने चकनाचूर हो जाते हैं क्योंकि ऐसे देश आर्थिक गिरावट का सामना करते हैं।

तानाशाही के दौर में देशों के पतन की भरपाई हो सकती है, अगर लोकतांत्रिक शासक भ्रष्टाचार और लालच से मुक्त होकर कड़ी मेहनत करें। लेकिन अगर अलग-अलग धर्मों के लोगों के बीच सामाजिक विभाजन है, तो उस अंतर को भरना असंभव है। वर्तमान में भारत में आर्थिक पतन के साथ-साथ सामाजिक विभाजन भी देश को भारी नुकसान पहुंचा रहा है। सामाजिक विभाजन एक ऐसा गहरा घाव है जो सीधे दिल और दिमाग पर चोट करता है, जिसे ठीक नहीं किया जा सकता।

जो भी इस घाव के लिए जिम्मेदार है, उसे लोगों द्वारा खारिज कर दिया जाना चाहिए क्योंकि अच्छे लोगों को चुनने की शक्ति लोगों के हाथ में है। हम भारत के लोगों में देश और हमारी आने वाली पीढ़ियों के भविष्य को सुरक्षित रखने की अपार दूरदर्शिता है। भारत के लोगों ने अतीत में यह दूरदर्शिता दिखाई है और वे वर्तमान समय में भी दिखा सकते हैं। मैं इस बात पर दृढ़ विश्वास रखता हूँ।



Dr. Rahul Kumar Balley
M.A., PhD



True revolution is not
change of rulers, but
the complete
dismantling of the
system that enslaves
the people
- Vladimir Lenin



अंबेडकर विरोधी लोगों के मुंह पर ज़ोरदार तमाचा है यह संविधान सभा के प्रमुख सदस्य टी. टी. कृष्णामाचारी का सदन में दिया हुआ भाषण

- अंड. के. टी. चावरे

Adv K T Chawre

Adv K T Chawre

राष्ट्रपति महोदय इस सदन को मैं बताना चाहूंगा कि मसौदा समिति पर हमने जिन सात लोगों का चयन किया था उनमें से एक सदस्य अमरीका चले गए तो दूसरे ने अपना इस्तीफ़ा दिया। एक सदस्य राज्य के कामों में व्यस्त रहे। दो सदस्य दिल्ली से दूर थे, इसलिए वह भी नहीं आ सके और एक सदस्य अपने स्वास्थ्य कि वज़ह से मसौदा तैयार करने के काम में भाग नहीं ले पाए।

Adv K T Chawre

Adv K T Chawre

आखिरकार संविधान लिखने की पूरी जिम्मेदारी अकेले डा अंबेडकर पर आ पड़ी और उन्होंने भी राष्ट्रहित ध्यान में रखकर यह जिम्मेदारी बखूबी निभाई। इसलिए यह देश हमेशा के उनके लिए अनुग्रहित रहेगा।



NEWS

Vol.1, Issue 20

Denial by Hindu Social Order

Hindu social order denies the masses the right to use arms. Other social orders such as those of the Muslims or the Nazis, follow the opposite course - **Dr. B. R. Ambedkar**

खुद को हिंदू कहने का दुर्भाग्य

हिंदू समाज व्यवस्था आम जनता को हथियार इस्तेमाल करने के अधिकार से वंचित करती है। अन्य सामाजिक व्यवस्थाएँ जैसे कि मुस्लिम या नाज़ी, इसके विपरीत रास्ता अपनाती हैं। वे सभी को समान अवसर देते हैं। वे ज्ञान प्राप्त करने की स्वतंत्रता देते हैं। वे हथियार रखने का अधिकार देते हैं और बल और हिंसा द्वारा विद्रोह को दबाने का पाप अपने ऊपर लेते हैं। अवसर की स्वतंत्रता से वंचित करना, ज्ञान प्राप्त करने की स्वतंत्रता से वंचित करना, हथियारों के अधिकार से वंचित करना सबसे क्रूर गलत है (अंबेडकर, खंड 3 पृष्ठ 126)।

स्त्री पर मनु

मनु ने स्त्री पर लिखा है कि स्त्री को न तो बौद्धिक इच्छाशक्ति होनी चाहिए और न ही विचार की स्वतंत्रता। उसे बौद्ध धर्म जैसे किसी भी विधर्मी संप्रदाय में शामिल नहीं होना चाहिए। अगर वह इसका पालन करना जारी रखती है, तो उसे मृत्यु तक जल का तर्पण नहीं दिया जाना चाहिए, जैसा कि सभी मृतकों के मामले में किया जाता है। (अम्बेडकर, खंड 3.पृष्ठ 316)।

हिन्दू और मुसलमान युद्ध के रास्ते पर हैं

मुसलमान और हिंदू एक दूसरे के खिलाफ़ जो तैयारियाँ कर रहे हैं, वे दो शत्रु राष्ट्रों के बीच हथियारों की होड़ की तरह हैं। अगर हिंदुओं के पास बनारस विश्वविद्यालय है, तो मुसलमानों के पास अलीगढ़ विश्वविद्यालय होना चाहिए। अगर हिंदू शुद्धि आंदोलन शुरू करते हैं, तो मुसलमानों को तबलीग आंदोलन शुरू करना चाहिए। अगर हिंदू संगठन शुरू करते हैं, तो मुसलमानों को तंजीम से उसका मुकाबला करना चाहिए। अगर हिंदुओं के पास आर.एस.एस. (राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ) है, तो मुसलमानों को खाकसार (एक मुस्लिम स्वयंसेवक दल) का गठन करके जवाब देना चाहिए।

सामाजिक शस्त्रास्त्रों और उपकरणों की यह दौड़ युद्ध पथ पर अग्रसर राष्ट्रों की विशेषता वाले दृढ़ संकल्प और आशंका के साथ चल रही है। मुसलमानों को डर है कि हिंदू उन्हें अपने अधीन कर रहे हैं। हिंदुओं को लगता है कि मुसलमान उन्हें फिर से जीतने में लगे हुए हैं। दोनों ही युद्ध की तैयारी करते दिखते हैं और एक दूसरे की "तैयारियों" पर नज़र रख रहे हैं (अंबेडकर, खंड 8, पृष्ठ 246)।

डॉ. जटाऊ ने अंबेडकर के सोचने के तरीके पर चर्चा की

डॉ. जटाऊ ने अंबेडकर के चिंतन को सामाजिक मानवतावाद के रूप में वर्णित किया। इसमें निम्नलिखित सिद्धांत निहित थे: (1) मनुष्यों के बीच समानता (2) प्रत्येक मनुष्य अपने आप में एक लक्ष्य है; (3) प्रत्येक मनुष्य को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक

और धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार; (4) प्रत्येक मनुष्य को अभाव और भय से मुक्त करना; (5) स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व को बनाए रखना, तथा मनुष्य द्वारा मनुष्य, वर्ग और राष्ट्र द्वारा राष्ट्र के उत्पीड़न और शोषण से मुक्ति सुनिश्चित करने का प्रयास करना (6) सरकार की संसदीय प्रणाली के तहत एक लोकतांत्रिक समाज के लिए खड़ा होना; (7) सामाजिक परिवर्तन के साधन के रूप में अहिंसा में विश्वास करना और संघर्षों और गृहयुद्ध की संभावना को रोकने के लिए शांतिपूर्ण और प्रेरक तरीकों को अपनाना (8) किसी भी 'वाद' और उसके चरम पहलू में किसी भी सिद्धांत या हठधर्मिता से बचना; (9) आध्यात्मिक अनुशासन की आवश्यकता; और (10) सार्वभौमिक प्रेम, समानता और मानव भाईचारे की दृढ़ नींव जो बौद्धों ने सिखाई। (अहलूवालिया, बी.के. और शशि, (1981).बी.आर. अंबेडकर और मानवाधिकार, विवेक पब्लिशिंग कंपनी, दिल्ली, पृ.94.

राजा के सिर पर ब्राह्मण को बैठाना

अब सवाल यह उठता है कि मौत के करीब पहुंच रहे बुजुर्गों की सेवा करने से आमदनी कैसे बढ़ेगी? क्या उनकी सेवा करने से हाइड्रोजन पेरोक्साइड नामक रासायनिक अवशेष नष्ट हो सकता है, जो बुढ़ापे को तेज करता है और जीवन काल को घटाता है? याद कीजिए, अमेरिकी वैज्ञानिक अब इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि अगर एंटीऑक्सीडेंट की मदद से शरीर से फ्री रेडिकल्स (हानिकारक रसायन) को बाहर निकाल दिया जाए तो व्यक्ति का जीवन काल बढ़ाया जा सकता है। पहले माना जाता था कि बुढ़ापे की प्रक्रिया अपरिवर्तनीय है, लेकिन नए शोध से पता चला है कि अगर मेटाबॉलिज्म की प्रक्रिया से बनने वाले हाइड्रोजन पेरोक्साइड को एक खास एंजाइम द्वारा नष्ट कर दिया जाए तो वह पानी और ऑक्सीजन में बंट जाता है। इससे बुढ़ापे की गति काफी धीमी हो सकती है और जीवन काल बढ़ सकता है।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि समाज और परिवार में बुजुर्गों को उचित ध्यान दिया जाना चाहिए। अगर उनके जीवन के अनुभव से कोई लाभ मिल सकता है, तो उसे भी लिया जाना चाहिए। लेकिन जैसा कि मनुस्मृति कहती है कि राजा को सुबह उठकर बुजुर्गों की सेवा करनी चाहिए, वह पूरी तरह से अव्यावहारिक है। राजा द्वारा व्यक्तिगत रूप से उन्हें सेवा करने का आदेश देने का कोई औचित्य नहीं है, न ही इसके लिए सुबह का समय उपयुक्त है, क्योंकि सरकारी कर्मचारी भी सेवा कर सकते हैं और वे किसी भी निश्चित समय पर यह काम कर सकते हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह सेवा समाज के सभी वर्गों के बुजुर्गों को दी जानी चाहिए, न कि केवल वृद्धों को।

(संदर्भ: शर्मा (अज्ञात) सुरेंद्र कुमार, (2010), 21वीं सदी में मनुस्मृति, विश्व विजय पीटीई लिमिटेड, नई दिल्ली, पृष्ठ 340.



NEWS

Vol.1, Issue 20

इतिहास के पन्नों से

जैविक हेरोस

इस प्रकार, राष्ट्रवाद ऐतिहासिक और विकासवादी है। भारतीय ब्राह्मणों ने न केवल इसे अपनी छवि में बनाया, बल्कि अन्य छवियों को भी नष्ट कर दिया, जैसे कि अन्य सभी सामाजिक समुदाय उनके दुश्मन थे। सम्मक्का एक महान योद्धा-रणनीतिकार और एक आयोजक थी। कहा जाता है कि उसने हजारों आदिवासियों को संगठित किया था, जिन्होंने जम्पन्ना नाले के पास अपने धनुष, तीर, डंडे, कुल्हाड़ियों और अन्य घातक हथियारों के साथ खूनी लड़ाई लड़ी थी।

अपनी ज़मीन बचाने के इस संघर्ष में कई लोगों ने अपनी जान गँवाई। कोया चेतना

सम्मक्का के इर्द-गिर्द केंद्रित है। उनके संघर्षों पर कथाएँ और गीत हैं; उत्सवों के मौकों पर उनकी पूजा की जाती है। यह छवि इतनी शक्तिशाली है कि कोई भी रुद्रमा देवी को याद नहीं करता, जो काकतीय महिला शासक थीं, जिनके खिलाफ़ सम्मक्का ने अपनी बुद्धि का इस्तेमाल किया था। हर दो साल में एक बार सम्मक्का और सरक्का के नाम पर जातरा आयोजित किया जाता है। पूरे राज्य से लाखों लोग उनकी पूजा करने के लिए आते हैं।

सम्मक्का की छवि नायिका से देवी में बदलने के बाद, उनके आध्यात्मिक आधार का विस्तार मैदानी इलाकों में रहने वाली दलित-बहुजन जातियों तक हो गया। सदियों से अनुसूचित जाति (एससी) और अन्य पिछड़ी जातियाँ (ओबीसी) अपने बच्चों का नाम उनके नाम पर रखते हैं और जातरा में भाग लेते हैं। यह एकमात्र उदाहरण है जब आदिवासी नायिका से देवी बनी दलित-बहुजन समुदायों को स्वीकार्य हुई है।

संदर्भ: कांचा इलियाह (2009), बाद -हिंदू भारत: दलित-बहुजन, सामाजिक-आध्यात्मिक और वैज्ञानिक क्रांति में एक विमर्श, सेज पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, पृ.18-19.



मानव जीवन को सुखी और सफल बनाने के

सरोकार से जुड़ा है धर्म

आनंद श्रीकृष्ण साहित्यकार हैं और आनंद ने बौद्ध दर्शन पर अनेकों पुस्तकें भी लिखी हैं, बुद्ध के उपदेशों की वर्तमान समय में प्रसंगिकता और धम्म मार्ग पर चल कर मानव जीवन को कैसे सुखी, समृद्ध व सफल कैसे बना सकते हैं इस पर इनका विशेष योगदान है।

उनका मानना है कि बुद्ध के विचारों को अपनाकर ही समाज में व्याप्त वैमनस्यता और नफ़रत के भाव को ख़त्म किया जा सकता है।

आनंद का कहना है कि भारत में बुद्ध धम्म के पुनर्जागरण के सात दशक हो गए हैं। बोधिसत्व भारत रत्न बाबासाहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने सन् 1956 में विजयदशमी के दिन नागपुर में अपने लाखों अनुयायियों के साथ धम्म दीक्षा लेकर भारत में धम्मचक्र का अनुपर्वतन करके धम्म कारवां को नयी गति और दिशा प्रदान की थी। इसलिए बुद्ध धम्म के पुनर्जागरण के अब सात दशक हो गए हैं।

ऐसे में यह सवाल एक बार फिर आता है कि आखिर बाबासाहेब ने बुद्ध की शिक्षाओं को क्यों अंगीकार किया और धम्म कारवां क्यों आरंभ किया?

नई पीढ़ी के युवाओं के लिए इस सवाल का उत्तर जानना ज्यादा जरूरी है, ताकि वो बाबासाहेब को एक धम्मचक्र गतिमान करने वाले विभूति के रूप में भी देख सकें।

दलितों और शोषित समाज के अधिकतर लोगों में अपने संवैधानिक अधिकारों के प्रति जागरूक न होने के लिए और उनके अन्दर व्याप्त सामाजिक समस्याओं की जड़ में समुचित शिक्षा का अभाव मानते हैं।

आनंद पुस्तकें लिखने के साथ ही इन वर्गों के बीच इनकी बस्तियों में जाकर इनके दुःख-सुख में शामिल होकर इनकी वास्तविक परेशानियों के बारे में जानकारी लेते हैं और स्थानीय स्तर पर वहां पढ़े लिखे लोगों के जरिये उनकी समस्याओं का निवारण भी कराते हैं। इसके पीछे उनका और उनकी टीम का मकसद बस्तियों में ऐसे लोगों की टीम तैयार करना है, ताकि वंचितों की समस्याओं का निदान उन्हें वहां रह रहे शिक्षित लोगों के जरिये ही मिल सके। आनंद का मानना है कि उनके इस अभियान से शोषितों और वंचितों में शिक्षा के महत्त्व का अहसास होगा, इससे वे अपने बच्चों को भी शिक्षित करेंगे और उच्च शिक्षा देने के लिए भी खुद को तैयार करेंगे। उनका कहना है कि बहुजनों में खासतौर पर दलितों को शिक्षित करने के लिए बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने उनमें अलख जगाई, बाबा साहेब की इस मशाल को बहुजन नायककों ने बुझाने नहीं दिया और बाबा साहेब के शिक्षित हो, संघर्ष करें और संगठित हो के नारे को यथार्थ बनाने के लिए काम किया और उनके सामाजिक परिवर्तन और राजनीतिक आन्दोलन को आगे बढ़ाया, अब हम लोगों की जिम्मेदारी है कि बाबा साहेब के कारवां को पीछे ना जाने दे।

सामाजिक सरोकारों से जुड़े आनंद निस्वार्थ भाव से दलित-मलिन और गरीब बस्तियों में उनकी समस्याएं भी सुलझा रहे हैं और उनमें शिक्षा की अलख भी जगा रहे हैं, धम्म क्या

है और इंसान के जीवन में इसका क्या महत्त्व है इसे भी वे सभी लोगों को विस्तार से समझा रहे हैं, खुद को बौद्ध धर्म के करीबी होने के कारण वे बुद्ध की शिक्षाओं के माध्यम से समाज में फैली भ्रांतियों को भी दूर कर रहे हैं। वे कभी-कभी बातचीत में बताते हैं कि डॉ. अम्बेडकर ने अमेरिका के कोलम्बिया विश्वविद्यालय में अपनी पढ़ाई के दौरान यह निष्कर्ष निकाल लिया था कि भारत में प्रचलित जातिगत असमानता दलितों के पिछड़े होने का मुख्य कारण है. 9 मई, 1916 को कोलम्बिया विश्वविद्यालय में आयोजित एक सेमिनार

continue next page...



आनंद श्रीकृष्ण



NEWS

Vol.1, Issue 20

...continue page 03

में अपने रिसर्च पेपर 'भारत में जातियां-उनकी संरचना, उद्भव एवं विकास' के जरिए डॉ. अम्बेडकर ने यह साबित कर दिया था कि कुछ स्वार्थी लोगों ने जातिगत असमानता की व्यवस्था को शास्त्र सम्मत दिखाने की कोशिश की है और ये धारणा फैलाई है कि शास्त्र गलत नहीं हो सकते।

भारत लौटने के बाद डॉ.अम्बेडकर ने दलितों के मानवाधिकारों के लिए अलग-अलग मोर्चे पर प्रयास करना शुरू कर दिया। महाड सत्याग्रह द्वारा सार्वजनिक तालाबों से पानी पीने के अधिकार, कालाराम मंदिर में दलितों के प्रवेश का अधिकार, अंग्रेजी सरकार के सामने दलितों के लिए वयस्क मताधिकार का अधिकार, गोलमेज सम्मेलन में पृथक निर्वाचन के अधिकार की लड़ाई ऐसी ही कोशिश थी।

सन 1932 में ब्रिटिश सरकार ने दलितों के लिए पृथक निर्वाचन क्षेत्र की घोषणा भी कर दी थी लेकिन महात्मा गांधी द्वारा आमरण-अनशन करने के कारण डॉ. अम्बेडकर को तरह-तरह की धमकियां मिली। तब डॉ. अम्बेडकर को मजबूर होकर पूना पैक्ट स्वीकार करना पड़ा और दलितों के लिए आरक्षण के बदले में पृथक निर्वाचन का हक छोड़ना पड़ा। इस संघर्ष के दौरान डॉ. अम्बेडकर इस निष्कर्ष पर पहुंच चुके थे कि भारत में प्रचलित सामाजिक व्यवस्था में दलितों को राजनैतिक आजादी का अधिकार भले ही मिल जाए लेकिन उनको आर्थिक और सामाजिक बराबरी का हक नहीं मिल सकता इसलिये धर्म परिवर्तन पर विचार करने के लिए 30 एवं 31 मई 1936 को बंबई में आयोजित महार परिषद को संबोधित करते हुए डॉ. अम्बेडकर ने कहा था -'धर्म परिवर्तन कोई बच्चों का खेल नहीं है। यह 'मनुष्य के जीवन को सफल कैसे बनाया जाय' इस सरोकार से जुड़ा प्रश्न है... इसको समझे बिना आप धर्म परिवर्तन के संबंध में मेरी घोषणा के वास्तविक निहितार्थ का अहसास कर पाने में समर्थ नहीं होंगे। इसलिए लगभग दो दशकों तक दुनियाँ के सभी प्रचलित धर्मों के गहन अध्ययन और सोंच विचार करने के बाद ही 1956 में डॉ. अम्बेडकर ने बुद्ध, धम्म और संघ की शरण ली। उसी वर्ष बी बी सी को दिए अपने एक इंटरव्यू में बाबासाहेब ने कहा था कि उन्होंने बुद्ध धम्म और संघ की शरण इसलिये लिया है क्यों कि बौद्ध धम्म समता, स्वतंत्रता और बंधुत्व पर आधारित है।

बुद्ध ने अपने अनुयायियों को सम्बोधित करते हुए कहा था कि जैसे नदियाँ सागर में मिलने के बाद अपना पृथक असितत्व खोकर सागर का जल बन जाती हैं वैसे ही बुद्ध धम्म की दीक्षा लेने के बाद इसके अनुयायी पुरानी जातीय, सामाजिक और आर्थिक असमानता त्याग कर सभी बराबर बन जाते हैं और शील सदाचार के मार्ग पर चलने लगते हैं। सब अनुयायी एक दूसरे के प्रति समता और बंधुत्व का भाव रखते हैं।

बुद्ध कहते हैं कि उनका कोई अनुयायी उनके द्वारा उपदेशित सभी सुत्त को रट रट कर कंठस्थ कर ले परन्तु अपने जीवन में न उतारे उसकी स्थित एक चरवाहे के समान होती है जो दूसरों की गायों को दिन भर चराने के बाद शाम को गिन गिन कर वापिस कर देता है लेकिन दूध की एक बूँद भी नहीं पी पाता है। उस से अच्छा वह अनुयायी है जो केवल एक सुत्त जानता है लेकिन उसको अपने जीवन में उतार कर शील सदाचार का जीवन जीता है।

लेकिन आज विडंबना यह है कि कुछ लोग बौद्ध धम्म स्वीकार करने के बाद भी उपजातियों से बंधे हुए हैं और अभी भी अपनी उपजातियों में ही शादी व्याह करना चाहते हैं जो बुद्ध धम्म के मूलभूत सिद्धांतों के विरुद्ध है। इसी प्रकार सामाजिक बुराइयों जैसे शादी व्याह में दहेज़ लेना का लेन-देन, शराब, तम्बाकू, गुटखा जैसे नशीले पदार्थों का सेवन पंचशील के विरुद्ध है। इसलिये आवश्यकता इस बात की है कि हम शील सदाचार का जीवन जियें और अपने सामाजिक और संवैधानिक अधिकारों के साथ अपनी सामाजिक और संवैधानिक जिम्मेदारी के लिए भी कृतसंकल्प रहें तभी हम अपना, अपने परिवार का और समाज का भला कर सकते हैं और भारतवर्ष को सुखी समृद्ध और सशक्त बनाने में अपना सार्थक योगदान दे सकते हैं।



रिपब्लिकनपार्टी ऑफ़ इंडिया की तरफ 2569वीं बुद्ध पूर्णिमा मनाई गई।

आज बाबासाहेब डॉ॰ भीमराव अंबेडकर द्वारा स्थापित रिपब्लिकन पार्टी ऑफ़ इंडिया, हरियाणा की जिला-पानीपत इकाई की तरफ से करुणा के सागर गौतम बुद्ध की 2569वीं बुद्ध पूर्णिमा संत शिरोमणि गुरु रविदास भवन, गाँव-सिवाह में मनाई गई। कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोगों का बहुत-बहुत आभार एवं साधुवाद!





NEWS

Vol.1, Issue 20

बोधगया में आंदोलन- महाबोधि मंदिर बौद्धों को सौंप दिया जाए

आज धर्मशाला में बौद्धगया में महाबोधि महाविहार के प्रबंधन से ब्राह्मण पुजारियों के निष्कासन एवं प्रबंधन को पूर्ण रूप से बौद्धों को सौंपने को लेकर बौद्धों द्वारा चलाए जा रहे आंदोलन के समर्थन में अखिल भारतीय बौद्ध मंच एवं ऐस्तबरा के प्रदेश प्रधान श्री सुभाष चंद मुसाफिर, वरिष्ठ उप प्रधान श्री कमल कुमार, महामंत्री श्री राज कुमार विद्यार्थी एवं हिमाचल क्रिश्चियन कम्युनिटी के चेयरमैन श्री मेहर सैमुअल द्वारा जिलाधीश महोदय के माध्यम से राष्ट्रपति महोदय को हिंदी एवं अंग्रेजी भाषाओं में एक ज्ञापन सौंपा गया।

इस ज्ञापन के माध्यम से ये मांग की गई है कि बोधगया मंदिर (बीटी) ऐक्ट 1949 रद्द किया जाए तथा महाबोधि महाविहार (मन्दिर) का संपूर्ण प्रबंधन बौद्धों को सौंपा जाए। इस प्रबंधन का अभी जो प्रबंधन में 9 सदस्यों में से 4 से 5 सदस्य हिन्दू यानि कि ब्राह्मण पुजारी हैं जिन्हें तुरंत प्रभाव से प्रबंधन समिति से हटाया जाए। महाबोधि महाविहार चैत्य ट्रस्ट का गठन नए सिरे से किया जाए।



उन्होंने ज्ञापन में आगे कहा है कि यह मुद्दा केवल प्रशासनिक शासन का नहीं है बल्कि यह न्याय, धार्मिक स्वतंत्रता और लाखों बौद्धों के सम्मान का प्रश्न है। जब हिन्दुओं के मन्दिरों में ट्रस्ट प्रबंधन में बौद्ध, सिख, ईसाई या मुस्लिम नहीं हो सकता तो आजादी के बाद से बौद्ध विहार के प्रबंधन में ब्राह्मण पुजारी जो खुद को हिंदू कहता है क्या कर रहे हैं? ये बौद्धों का अपमान ही नहीं अपितु बौद्ध धम्म की धन सम्पदा को लूटने का षड्यंत्र है जिसे तुरंत प्रभाव से राष्ट्रपति महोदय को हस्तक्षेप कर के सुलझाना चाहिए। अन्यथा हम बौद्ध इस मामले को संयुक्त संघ अर्थात UNO तक ले कर जाएंगे।

अंत में उन्होंने प्रेस के माध्यम से विहार प्रशासन को चेताया कि वो आंदोलनकारियों को अवैध रूप से जेलों में बंद न करे। तथा बौद्ध भिक्षु भंते विनय आचार्य को शीघ्र जेल से रिहा करने की मांग भी की। उन्होंने कहा कि बोधगया में चल रहे आंदोलन के पक्ष में वे शीघ्र ही हिमाचल प्रदेश में भी बड़े स्तर पर विशाल जनसभा एवं रैली का आयोजन करने जा रहे हैं।



गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय में छात्र संवाद एवं विचार संगोष्ठी

ग्रेटर नोएडा, गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश में दिनांक - 09 मई 2025 को बुद्ध पूर्णिमा के उपलक्ष्य में गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय के महात्मा ज्योतिबा फुले ध्यान केंद्र में अंबेडकरवादी बुद्धिस्ट छात्रों के साथ छात्र संवाद व विचार संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसका मुख्य विषय - छात्र जीवन में तथागत बुद्ध और बाबा साहेब अंबेडकर का महत्व तय किया गया था ! जिसमें आल इंडिया समता सैनिक दल, उत्तर प्रदेश इकाई के उत्तर प्रदेश महासचिव श्री रंजीत कुमार गौतम ने बतौर मुख्य अतिथि व वक्ता के रूप में सभी छात्रों को संबोधित किया।

अतः इस छात्र संवाद में रंजीत कुमार गौतम ने भारतीय समाज के ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से आधुनिक भारत तक विस्तार पूर्वक प्रकाश डाला। उन्होंने समस्त छात्रों को तथागत बुद्ध और बाबा साहेब अंबेडकर के दर्शन और सिद्धांतों से अवगत कराया गया। इस संवाद में बाबासाहेब अंबेडकर के त्याग और बलिदान पर विस्तार पूर्वक प्रकाश डाला गया। और साथ ही उन सभी छात्रों को अंबेडकरवादी बुद्धिस्ट मिशन मूवमेंट को आगे बढ़ाने हेतु प्रेरित किया गया। सिद्धार्थ प्रताप आनंद, राघव सिंह और राहुल कुमार ने भी अपने-अपने विचार प्रस्तुत किये। राघव सिंह ने बड़े ही विधवत रूप से इस कार्यक्रम का संचालन किया। इस छात्र संवाद में लगभग 25 छात्रों ने हिस्सा लिया। गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय के छात्र राघव सिंह, सिद्धार्थ प्रताप आनंद और पीयूष देव इस विचार संगोष्ठी व छात्र संवाद के मुख्य आयोजक थे। जिसके लिए वह सदैव साधुवाद के पात्र रहेंगे।





NEWS

Vol.1, Issue 20

बदलाव सोशल सोसायटी हरियाणा के द्वारा रक्तदान शिवर का आयोजन किया गया



बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर दिन रविवार को डॉक्टर भीमराव अंबेडकर बहुआयामी प्रशिक्षण संस्थान की साइट पर बदलाव सोशल सोसायटी हरियाणा के द्वारा रक्तदान शिवर का आयोजन किया गया और इस रक्तदान शिवर को भारतीय सेना को समर्पित किया गया। इस रक्तदान शिविर में करीबन 80 लोगों ने अपना ब्लड डोनेट किया। व इस कार्यक्रम में डॉक्टर भीमराव अंबेडकर बहुआयामी प्रशिक्षण संस्थान के नए ब्लॉक दो कमरे 20 *24 और एक टॉयलेट ब्लॉक जो की है कुल एरिया करीबन 2400 स्क्वायर फीट एरिया बनता है की नींव रखी गई। इस कार्यक्रम में डॉक्टर प्रोफेसर शशिम अहमद वाइस चांसलर नीलम यूनिवर्सिटी कैथल, डॉ विनोद कुमार डायरेक्टर एमडीएन ग्लोबल स्कूल, डॉ राजेंद्र थिंड व डॉक्टर राहुल प्रबुद्ध भारत फाउंडेशन, मान्यवर कृष्ण पाल रंगा रिटायर्ड मैनेजर एसबीआई, मान्यवर वेदपाल बामनिया retd BLEO पशुपालन विभाग हरियाणा सरकार, मान्यवर धर्मवीर आर्य इन सभी साथियों ने इस कार्यक्रम में शिरकत की व डॉक्टर भीमराव अंबेडकर बहुआयामी प्रशिक्षण संस्थान के नए ब्लॉक की नींव रखी। यह बदलाव सोशल सोसायटी हरियाणा के द्वारा आयोजित तीसरा ब्लड कैंप था।



ਭਾਰਤ ਰਤਨ ਬਾਬਾ ਸਾਹਿਬ ਡਾ. ਭੀਮ ਰਾਓ ਅੰਬੇਡਕਰ ਜੀ ਦੇ ਜਨਮ ਦਿਵਸ ਦੀਆਂ ਸਮੂਹ ਸੰਸਾਰ ਨੂੰ

ਲੱਖ-ਲੱਖ ਵਧਾਈਆਂ

ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ ਜੀ ਮਹਾਰਾਜ

ਤਬਾਹਾਤ ਗੋਤਮ ਬੁੱਧ

ਸਿਤਗੁਰੂ ਗੋਤਮ ਸਾਹਿਬ

ਸ੍ਰੀ ਜਤੀ ਰਾਏ ਫੂਲੇ

ਸ੍ਰੀ ਈ.ਵੀ. ਪੈਰਿਸਰ ਰਾਮਾਸਾਮੀ

ਮਾਤਾ ਰਮਾਬਾਈ ਅੰਬੇਡਕਰ

ਬਾਬਾ ਸਾਹਿਬ ਡਾ. ਅੰਬੇਡਕਰ

ਮਾਤਾ ਸਾਵਿਤਰੀ ਬਾਈ ਫੂਲੇ

ਸਾਹਿਬ ਸ੍ਰੀ ਕਾਂਸ਼ੀ ਰਾਮ

ਸ੍ਰੀ ਸ਼ਾਹੂ ਜੀ ਮਹਾਰਾਜ

ਸ੍ਰੀ ਲਾਚੇਰੀ ਰਾਮ ਬਾਲੀ (ਐੱਲ.ਆਰ. ਬਾਲੀ)

ਕਾਇਰ ਲੋਕ ਨਿਊਂਦੇ ਰਹਿ ਕੇ ਵੀ ਮਰੇ ਹੁੰਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਕੁਝਾਂ ਦੀ ਰਾਹ ਤੋਂ ਚਲਣ ਵਾਲੇ ਲੋਕ ਮਰ ਕੇ ਵੀ ਨਿਊਂਦੇ ਰਹਿੰਦੇ ਹਨ : ਡਾ. ਅੰਬੇਡਕਰ

ਵੱਲੋਂ : ਭੀਮ ਪੱਤ੍ਰਿਕਾ ਪਬਲਿਕੇਸ਼ਨ, ਡਾ. ਅੰਬੇਡਕਰ ਮਾਰਗ, ਜਲੰਧਰ।

JANUARY							FEBRUARY							MARCH							
S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	
			1	2	3	4								1	30	31				1	
5	6	7	8	9	10	11	2	3	4	5	6	7	8	9	2	3	4	5	6	7	8
12	13	14	15	16	17	18	9	10	11	12	13	14	15	16	9	10	11	12	13	14	15
19	20	21	22	23	24	25	16	17	18	19	20	21	22	23	16	17	18	19	20	21	22
26	27	28	29	30	31		23	24	25	26	27	28			23	24	25	26	27	28	29
APRIL							MAY							JUNE							
			1	2	3	4					1	2	3	1	2	3	4	5	6	7	
6	7	8	9	10	11	12	4	5	6	7	8	9	10	11	8	9	10	11	12	13	14
13	14	15	16	17	18	19	11	12	13	14	15	16	17	18	15	16	17	18	19	20	21
20	21	22	23	24	25	26	18	19	20	21	22	23	24	25	22	23	24	25	26	27	28
27	28	29	30				25	26	27	28	29	30	31		29	30					
JULY							AUGUST							SEPTEMBER							
			1	2	3	4	5	31					1	2	1	2	3	4	5	6	
6	7	8	9	10	11	12	3	4	5	6	7	8	9	10	7	8	9	10	11	12	13
13	14	15	16	17	18	19	10	11	12	13	14	15	16	17	14	15	16	17	18	19	20
20	21	22	23	24	25	26	17	18	19	20	21	22	23	24	21	22	23	24	25	26	27
27	28	29	30	31			24	25	26	27	28	29	30		28	29	30				
OCTOBER							NOVEMBER							DECEMBER							
			1	2	3	4	30						1	1	2	3	4	5	6		
5	6	7	8	9	10	11	2	3	4	5	6	7	8	9	7	8	9	10	11	12	13
12	13	14	15	16	17	18	9	10	11	12	13	14	15	16	14	15	16	17	18	19	20
19	20	21	22	23	24	25	16	17	18	19	20	21	22	23	21	22	23	24	25	26	27
26	27	28	29	30	31		23	24	25	26	27	28	29	30	28	29	30	31			
HOLIDAYS - 2025																					
JANUARY	31	Eid-ul-Fitr	APRIL	11	Satguru Kabir Jayanti	23	Deepavali	NOVEMBER	05	Guru Nanak Dev Jayanti	14	Bal Divas	DECEMBER	25	Christmas Day	26	Shaheed Udham Singh Birth Day				
13	Lohri	06	Ram Navami	09	Raksha Bandhan	05	Guru Nanak Dev Jayanti	14	Bal Divas	25	Christmas Day	26	Shaheed Udham Singh Birth Day								
14	Makar Sankranti	10	Mahavir Jayanti	15	Independence Day	16	Janmashtami	05	Eid E-Milad	28	Bhagat Singh Jayanti	26	Shaheed Udham Singh Birth Day								
FEBRUARY	10	Mahavir Jayanti	13	Baisakhi	16	Janmashtami	05	Eid E-Milad	28	Bhagat Singh Jayanti	26	Shaheed Udham Singh Birth Day									
03	Basant Panchami	18	Good Friday	18	Good Friday	18	Good Friday	01	May Day	02	Gandhi Jayanti	02	Dussehra								
12	Guru Ravidas Jayanti	14	Dr. Ambedkar Jayanti	14	Dr. Ambedkar Jayanti	14	Dr. Ambedkar Jayanti	01	May Day	02	Gandhi Jayanti	02	Dussehra								
26	Maha Shivratri	12	Buddha Purnima	12	Buddha Purnima	12	Buddha Purnima	01	May Day	02	Gandhi Jayanti	02	Dussehra								
14	Holi	07	Eid-ul-Adha	07	Eid-ul-Adha	07	Eid-ul-Adha	02	Dussehra	07	Maharishi Valmiki Jayanti	07	Maharishi Valmiki Jayanti								
23	Shaheed Divas																				

भीम पत्रिका

नमो बुद्धाय - जय भीम

DR. RAHUL BALI 9667101963 FOR GETTING BHEEM PATRIKA

APPEAL FOR DONATION !!

"Have you ever thought why we should have our own newspaper?" Remember, a community without a voice is known to be a dead community. Therefore we need a newspaper to raise our voice. Bheem Patrika is the only newspaper which fearlessly exposes viciousness and superstition of Brahminism.

"Respected Shri. L. R. Bailey ji started Bheem Patrika in 1958 to spread the mission of Baba Sahab Dr. B. R. Ambedkar.

"Following his legacy after his death at the age of 94 in 6th July, 2023, we have launched Bheem Patrika online in October, 2023.

"The content we publish is to highlight the thoughts of Dr. Ambedkar. We also publish articles and news on Buddhism. Apart from this, we analyze the news on atrocities on religious minorities to raise their voice consistently. "Every year we spend Rs. 48,500/- on publishing Bheem Patrika." We need your financial support to continue it since Bheem Patrika is the only paper that purely talks about Ambedkarianism and Buddhism.

"We kindly request our supporters, missionaries, sympathizers to donate wholeheartedly to continue this paper."

PLEASE SEND YOUR WHATSAPP NUMBER

DR. RAHUL BALI 9667101963 FOR GETTING BHEEM PATRIKA

Name : NAINDIP
Bank's Name : BANK OF INDIA
Account No. : 640910110002350
IFSC : BKID0006409
Bank Branch : Model Town Road, Jalandhar City (Punjab)

सहायता के लिए अपील!!

क्या आपने कभी सोचा है कि हमारा अपना अखबार क्यों होना चाहिए?

यदि नहीं, तब हम आपको हमारा सपना सुना रहे हैं। हमारे पास एक अखबार है, भीम पत्रिका। हमें एक अखबार की आवश्यकता है जो निरंतर होकर ब्राह्मणवाद की दुर्लक्ष और अंधविश्वास को उजागर करे।

आधुनिक की एक आवाज़, वाली जो न केवल साहब डॉ. बी. आर. अंबेडकर के विचारों को फैलाने के लिए 1958 में भीम पत्रिका की शुरुआत की। 6 जुलाई, 2023 में 94 वर्ष की आयु में उनकी मृत्यु के बाद उनकी विरासत का अनुसरण करते हुए, हमने अक्टूबर, 2023 में भीम पत्रिका को ऑनलाइन लॉन्च किया है।

हम को सफलता प्राप्त करने में हर डॉ. अंबेडकर के विचारों को उजागर करने के लिए है। हम भीम पत्रिका पर लेख और समाचार भी प्रकाशित करते हैं, इसके अलावा हम साप्ताहिक धार्मिक अवसरों पर से रहे आवाज़ों की आवाज़ उठाने के लिए खबरों पर प्रकाश डालते हैं। हर साल हम भीम पत्रिका के प्रकाशन पर 48,500/- रुपये खर्च करते हैं, इसे जारी रखने के लिए हमें आपके वित्तीय सहयोग की आवश्यकता है क्योंकि भीम पत्रिका एकमात्र ऐसा अखबार है जो विमुक्त रूप से अंबेडकरवाद और भीम पत्रिका के बारे में बात करता है। हम अपने कर्मचारियों, मिशनरियों से अनुमति करते हैं कि वे इस अखबार को जारी रखने के लिए पूरे दिल से सहमत हों।

भीम पत्रिका प्राप्त करने के लिए कृपया अपना ब्याट्सएप नंबर

डॉ. राहुल बाली 9667101963 पर भेजें।

Name : NAINDIP
Bank's Name : BANK OF INDIA
Account No. : 640910110002350
IFSC : BKID0006409
Bank Branch : Model Town Road, Jalandhar City (Punjab)



NEWS

Vol.1, Issue 20

Congratulations to Gautam ji



Chairman SC Department, Indian National Congress Party (INC)

Congratulations to Gautam ji !

Bheem Patrika congratulates **Shri Rajendra Pal Gautam ji** on his appointment as **Chairman of SC department of Indian National Congress Party (INC)**. Shri Gautam ji is a true Ambedkarite Buddhist.



अपील

समाज के सभी प्रबुद्धजनों से अपील की जाती है कि 'डॉ. भीमराव अम्बेडकर बहुआयामी प्रशिक्षण संस्थान, कैथल' के भवन को बनाने के लिए बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर के मिशन 'PAY BACK TO SOCIETY' के तहत तन-मन-धन से सहयोग करें, जिससे कि मार्गदर्शन व अवसर से वंचित बच्चे मुख्यधारा में आकर अपना भविष्य संवार सकें। आप इस नेक कार्य में बदलाव सोशल सोसाइटी, हरियाणा के नाम चैक, ड्राफ्ट, नेट बैंकिंग से सीधे ही अपना आर्थिक सहयोग जमा करवा सकते हैं।

Badlav Social Society
Bank Name : Bank of Baroda
Ambala Road, Kaithal

A/C No. 78830200001534
IFSC Code : BARB0VJKAIT
शून्य



SCAN TO PAY
WITH ANY BHIM UPI APP



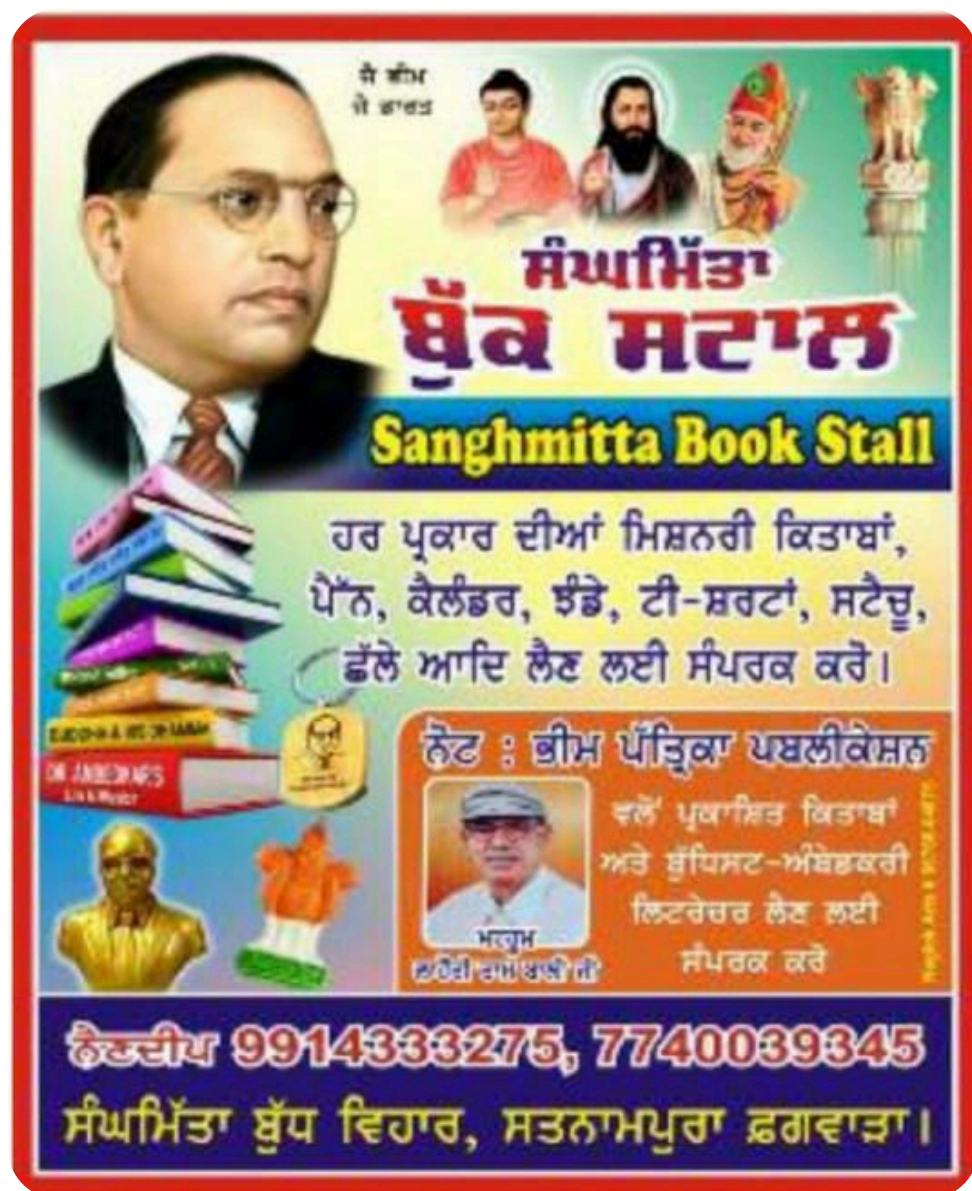
Merchant Name : BADLAV SOCIAL SOCIETY



SCAN TO PAY
WITH ANY BHIM UPI APP



Merchant Name : BADLAV SOCIAL SOCIETY





NEWS

Vol.1, Issue 20

भूषण आर. गवई का सीजेआई बनना संविधान की ताकत सीजेआई का प्रोटोकॉल तोड़ना और ग्वालियर हाईकोर्ट में बाबा साहब की मूर्ति का विरोध शर्मनाक

अंबेडकर मिशन सोसाइटी पंजाब (रजि.) के अध्यक्ष चरण दास संधू और महासचिव बलदेव राज भारद्वाज ने प्रेस के नाम एक सांझे बयान में कहा है कि एक दलित व्यक्ति माननीय भूषण आर. गवई का भारत की सर्वोच्च न्यायालय में सीजेआई बनना संविधान की ताकत है। माननीय के. जी. बाळकृष्णन के बाद माननीय भूषण आर गवई दूसरे दलित व्यक्ति हैं जो भारत की सर्वोच्च न्यायालय के चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया बने हैं। उन्होंने कहा कि माननीय भूषण गवई जब सीजेआई बनने के बाद महाराष्ट्र के दौरे पर गए तो उनके सम्मान में प्रोटोकॉल को तोड़ना और उधर मध्य प्रदेश की ग्वालियर हाईकोर्ट में मनुवादी वकीलों द्वारा बाबासाहब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर की मूर्ति का विरोध भारत के लिए अत्यंत शर्मनाक बात है। यूएसए की कोलंबिया यूनिवर्सिटी में बाबासाहब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर की आत्मकथा 'वेटिंग फॉर विजा' टेक्स्ट बुक के तौर पर पढ़ाई जा रही है और हमारे देश में ऐसी जातिगत शर्मनाक हरकतों से दूसरे देशों में भारत की छवि खराब हो रही है।



सी.जे.आई. माननीय बी.आर.गवई

संधू और भारद्वाज ने आगे कहा कि रामकृष्ण सूर्यभान गवई (30 अक्टूबर 1929 - 25 जुलाई 2015), जिन्हें दादा साहब गवई के नाम से जाना जाता है, एक भारतीय राजनीतिज्ञ, सामाजिक कार्यकर्ता, अम्बेडकरवादी आंदोलन के वरिष्ठ नेता और रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया (गवई) के संस्थापक थे। वह एक अम्बेडकरवादी और बौद्ध थे। वे अम्बेडकर की वैचारिक पार्टी रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया के अध्यक्ष थे, इस पार्टी के माध्यम से उन्होंने राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्रों में कई कार्य किए। गवई ने बाबासाहेब अम्बेडकर के साथ भी काम किया। वे बिहार, सिक्किम और केरल के तीन राज्यों के राज्यपाल थे, साथ ही उन्होंने भारतीय संसद के दोनों सदनों, लोकसभा और राज्यसभा में कार्य किया है। गवई महाराष्ट्र विधान परिषद के 30 साल के सदस्य (एमएलसी) थे, जिसके दौरान उन्होंने परिषद के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष और विपक्ष के नेता के पदों पर कार्य किया। रामकृष्ण सूर्यभान गवई के बेटे न्यायमूर्ति भूषण रामकृष्ण गवई 14 मई को भारत के 52वें मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई) के रूप में शपथ लेकर वे गणतंत्र के इतिहास में भारतीय न्यायपालिका के शीर्ष पर पहुंचने वाले दूसरे दलित व्यक्ति बन गए। न्यायमूर्ति गवई ने अक्सर भारत के संविधान की महानता के बारे में बात की है, जिसने उन्हें यह मुकाम दिलाया। उन्होंने अपने भाषण में कहा था, "यह केवल डॉ. बी.आर. अंबेडकर के प्रयासों के कारण ही संभव हो पाया है कि मेरे जैसे व्यक्ति, जो एक नगरपालिका स्कूल में एक अर्ध-झुगगी क्षेत्र में पढ़ता था, इस पद को प्राप्त कर सका।" उन्होंने अपने भाषण का समापन "जय भीम" के नारे के साथ किया था। उन्होंने कहा न तो न्यायपालिका, न कार्यपालिका न ही संसद सर्वोच्च है, बल्कि भारत का संविधान सर्वोच्च है।

बलदेव राज भारद्वाज

महासचिव, अंबेडकर मिशन सोसाइटी पंजाब (रजि.)



Sad Demise of “Sh. Rattan Lal Sampla Ji”

“It is a very, very sad moment—a huge loss to the Ambedkarite mission and the Buddhist movement. He will remain in our memories for a long time as a selfless missionary, a true inspiration to be followed.”

May “Shri Rattan Lal Sampla Ji” attain highest bliss of nibbana





NEWS

Vol.1, Issue 20

अंबेडकर मिशन सोसायटी पंजाब (रजि.) के अध्यक्ष की माता के निधन से संधू परिवार स्तब्ध

अंबेडकर मिशन सोसाइटी के अध्यक्ष श्री चरण दास संधू की माता श्रीमती प्रीतम कौर जी के 16 मई, 2025 को निधन से संधू परिवार को गहरा सदमा लगा है। उसी दिन माता जी का उनके गांव 'वरियाणा' में बौद्ध रीति-रिवाजों के अनुसार अंतिम संस्कार किया गया तथा उसी दिन श्री गुरु रविदास भवन में एक समारोह में उन्हें बौद्ध श्रद्धांजलि अर्पित की गई, जिसमें भिक्खु चंद्र कीर्ति जी ने उपासकों को त्रिशरण-पंचशील का जाप करवाया तथा कहा कि हमारे समाज को हम पर थोपी गई इन रूढ़िवादी परंपराओं को त्याग देना चाहिए। इस दुःख की घड़ी में, डॉ. जी. सी कौल, श्री सोहन लाल सेवानिवृत्त. डी. पी. आई. (कॉलेजों), प्रो. अश्विनी जस्सल, प्रो. बलबीर, प्रो. अरिंदर सिंह, बलदेव भारद्वाज, हरमेश जस्सल, निर्मल बिंझी, विनोद शर्मा, डॉ. बी.के. छाबड़ा, डॉ. राज कुमार (कोट सादिक), डॉ. जगजीत सिंह, डॉ. राकेश कुमार, वरियाणा वेलफेयर सोसायटी के अध्यक्ष शरण दीप सिंह भुल्लर और सहयोगी मनोहर भारद्वाज, कमल राहिल, गुरजीत सिंह, सतनाम सिंह, जी.डी. संधू, नक्श वरयानवी, दलजीत हंस, गौतम बौद्ध और क्षेत्र की कई अन्य गणमान्य हस्तियों ने इस अवसर पर अपनी भावपूर्ण उपस्थिति लगवाई।



आदरणीय माता प्रीतम कौर जी

चरणदास संधू के परिवार द्वारा अंतिम संस्कार की परम्परा से हटकर लिए गए इस क्रांतिकारी निर्णय ने भारत में रूढ़िवादिता, कर्मकाण्ड, अंधविश्वास और पाखंड को गहरा आघात पहुंचाया है और इसके साथ ही 14 अक्टूबर 1956 को बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर द्वारा शुरू की गई धम्म क्रांति की मशाल को प्रज्वलित रखने के लिए उन्होंने अपना छोटा सा योगदान दिया क्योंकि उनके पिता श्री मीत राम संधू जी एक कट्टर तर्कवादी और कर्मठ व्यक्ति थे। यह उनकी प्रेरणा का ही परिणाम है कि उनका परिवार पूर्णतः बौद्ध अंबेडकरवादी है। यह जानकारी अंबेडकर मिशन सोसायटी पंजाब (रजि.) के महासचिव बलदेव राज भारद्वाज ने प्रेस बयान में दी।

बलदेव राज भारद्वाज

महासचिव, अंबेडकर मिशन सोसाइटी पंजाब (रजि.)



Namo Buddha

Jay Bheem

1958 में पंजाब में बाबा साहेब डॉ. भीम राव अंबेडकर के नाम को स्थापित करने के अपने संघर्ष में जब मैंने भीम पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया। न केवल ब्राह्मणों की ओर से, बल्कि हमारे अपने ही कुछ लोगों की ओर से कड़ा विरोध था, जिनका मानसिक रवैया सिर्फ मुझे ऐसा करने से हतोत्साहित करना था, लेकिन मैं उनके दुष्ट एजेंडे के सामने कभी नहीं झुका। मैंने अपने जीवन में अनुभव किया है कि "निंदा एक कायर का बदला है, और झूठ बोलना उसका बचाव है"। कायरों और दुष्टों से कभी मत डरो। वे बाबा साहेब के समय में भी वहीं थे और वहीं रहेंगे। बिना डरे अपना काम जारी रखें। बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर और तथागत गौतम बुद्ध का आशीर्वाद आपकी और आपके परिवार की रक्षा करता रहेगा।

एल.आर.बाली मुख्य संपादक भीमपत्रिका

अपने संघर्ष में आपको हज़ारों घटिया, ईर्ष्यालु, दुर्भावनापूर्ण, लालची, झगड़ालू, कायर, नपुंसक, बिकाऊ, संकीर्ण सोच वाले और अवसरवादी लोगों का सामना करना पड़ सकता है। ऐसे लोग असामाजिक होते हैं। उनका उद्देश्य बाबा साहब के कारवां को रोकना या आपको हतोत्साहित करना होता है। उनका चरित्र कलंकित होता है। उनका मानसिक स्तर बहुत खराब होता है। ऐसे लोगों की कभी चिंता न करें। उन्हें नज़रअंदाज़ करें। ऐसे लोगों पर अपना कीमती समय और ऊर्जा बर्बाद न करें। ईमानदार और दृढ़ रहें। हमेशा याद रखें कि केवल ईमानदार, समर्पित और निडर लोग ही बाबा साहब डॉ. अंबेडकर के मिशन को आगे बढ़ा सकते हैं।-- एल. आर. बाली, मुख्य संपादक, भीम पत्रिका।



NEWS

Vol.1, Issue 20

बिहार चुनाव बनाम मायावती

बिहार चुनाव में मायावती क्यों सक्रिय हो गई हैं। भाजपा और आरएसएस ने एक बार फिर उनसे दलित वोटों को बांटने के लिए कहा है। एक बार फिर दलितों को लूटा जाएगा, एक बार फिर दलितों को बेवकूफ बनाया जाएगा, एक बार फिर मायावती भाजपा की सरकार बनाने में मदद करेंगी। एक बार फिर दलितों को सत्ता से वंचित किया जाएगा। एक बार फिर बसपा के एजेंट नए नारों के साथ पंजाब की तरह गरीब दलितों को लूटेंगे। लेकिन अंत में नुकसान दलितों का ही होगा। मेरे प्यारे दलित भाइयों, कब आपकी आंखें खुलेंगी। कब आप जागेंगे। कब आप नकली नेताओं और उनके एजेंटों को पहचानेंगे।

आकाश आनंद को फिर से पार्टी में शामिल करने के बाद, जिन्हें मायावती ने इसलिए निकाल दिया था क्योंकि उन्होंने भाजपा/आरएसएस के खिलाफ बोलने की हिम्मत की थी। मायावती और वंशवाद की राजनीति करने वाली अन्य राजनीतिक पार्टियों में कोई अंतर नहीं है। मायावती अपने परिवार को आगे बढ़ा रही हैं। बाकी दलित कार्यकर्ता बनकर रह जाएंगे जो मंच तैयार करेंगे। ब्राह्मण और आकाश आनंद मक्खन खाएंगे। दलित सिर्फ चिल्लाएंगे और उन्हें कुछ नहीं मिलेगा, सिवाय मायावती के नाम पर पैसे कमाने वाले चंद लोगों के। दिल्ली में करोल गैंग फिर से गरीब दलितों को लूटने के लिए सक्रिय हो गया है। पहले उन्होंने मायावती को प्रधानमंत्री बनाने के नाम पर दलितों को लूटा लेकिन वह प्रधानमंत्री नहीं बन पाई। एक बार फिर वे दलितों को बेवकूफ बनाने के लिए कोई नया नारा गढ़ेंगे, एक बार फिर दलित दलालों को पैसा देंगे जो मायावती तक नहीं पहुंचेगा।



BSP Supremo Mayawati



Dr.Suraj Milind Yengde's second PH.D from University of Oxford with mother Yengde



Mrs Sujata Sallan and Mr Sallan along with Mrs. Kamlesh Heer, paid a visit to Mississauga Buddhist Vihara , Toronto. They are staunch Ambedkarite Buddhists. They are spreading the mission in Canada.



NEWS

Vol.1, Issue 20

Donations



Sh. Bhuvnesh Shaurya

श्री भुवनेश शौर्य देव द्वारा ₹ 1,000/- एवं श्री सोहन पाटिल जी द्वारा ₹ 500/- की राशि का भीम पत्रिका को अपना सहयोग प्रदान करने पर हम इनका हार्दिक बधाई के साथ बहुत-बहुत साधुवाद ज्ञापित करते हैं



Shri Sohan Patil

Bheem Patrika thanks Nagar Family

**Manvender Nagar, Amanpreet Nagar, Jason Nagar, Rivya Nagar
S / o Late Sh. P. D. Nagar, Smt Shakuntla Nagar**

For donation of **Rs.6,000/-** to Bheem Patrika . We are grateful to them for their financial support.



S N Chaudhary
Retd. Chief Manager SBI

Bheem Patrika thanks Mr Somnath Chaudhary for donation of Rs.500/-- to Bheem Patrika. Support to Bheem Patrika is appreciable.



VANSHAJ SPICES
REQUIRES
DISTRIBUTORS & WHOLESALERS
ON
PAN INDIA BASIS



BUDDHISM

Vol.1, Issue 20

माध्यमिक स्कूल

मध्यमिकाओं को ऐसा इसलिए कहा जाता है क्योंकि वे मध्यम-प्रतिपात (मध्यम दृष्टिकोण) पर जोर देते थे। बनारस में अपने पहले उपदेश में, बुद्ध ने मध्यम मार्ग का उपदेश दिया, जो न तो आत्म-पीड़ा है और न ही इंद्रियों के सुखों के लिए समर्पित जीवन है। हालाँकि, मध्यमिका प्रणाली के अनुयायियों द्वारा वकालत की गई मध्यम मार्ग बिल्कुल वैसा ही नहीं है। यहाँ, मध्यम मार्ग अस्तित्व और गैर-अस्तित्व, शाश्वतता और अनंतता, स्वयं और अनात्मा आदि से संबंधित दो विचारों की अस्वीकृति के लिए खड़ा है। संक्षेप में, यह न तो वास्तविकता के सिद्धांत की वकालत करता है और न ही दुनिया की अवास्तविकता की, बल्कि केवल सापेक्षता की। हालाँकि, यह ध्यान देने योग्य है कि बनारस में प्रतिपादित मध्यम मार्ग का एक नैतिक अर्थ है, जबकि मध्यमिकाओं का एक आध्यात्मिक अवधारणा है।

संदर्भ: बापट, पी.वी. (1956) बौद्ध धर्म के 2500 वर्ष, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार, पृ.120.



बौद्ध धर्म को प्राथमिकता

मैं बौद्ध-धम्म को इसलिए प्राथमिकता देता हूँ, क्योंकि इसमें तीन ऐसे सिद्धांत एक ही स्थान पर मिलते हैं, जो किसी दूसरे धर्म में नहीं मिलते। बुद्ध-धम्म जड़ता की अपेक्षा सूझ-बूझ की शिक्षा देता है, वह करुणा (प्रेम व भ्रातृत्व) और समता सिखाता है, ये वे वस्तुएं हैं, जो मनुष्य के अच्छे व प्रसन्न जीवन के लिए अनिवार्य हैं। न तो ईश्वर, न आत्मा इस समाज को बचा सकते हैं।"-भारत- रत्न डॉ बाबासाहेब अंबेडकर.

बुद्ध-वचन

यदि कोई ऐसी बात है, जो बुद्ध के बारे में बड़े ही विश्वास के साथ कही जा सकती है तो वह यह है कि वे कुछ नहीं थे, यदि उनका कथन बुद्धिसंगत, तर्कसंगत नहीं होता। इसलिए जो कुछ भी बुद्धि-संगत हैं और तर्क-संगत है। यदि कोई ऐसी बात है, जो बुद्ध के बारे में बड़े ही विश्वास के साथ कही जा सकती है तो वह यह है कि वे कुछ नहीं थे, यदि उनका कथन बुद्धिसंगत, तर्कसंगत नहीं होता। इसलिए जो कुछ भी बुद्धि-संगत हैं और तर्क-संगत है, अन्य बातें समान होते हुए उसे 'बुद्ध-वचन के रूप में लिया जा सकता है.-बुद्ध .

युद्ध से किसी प्रश्न या समस्या का समाधान नहीं होता

युद्ध से किसी प्रश्न या समस्या का समाधान नहीं होता। युद्ध छेड़ देने से हमारे उद्देश्य की पूर्ति नहीं होगी। इससे एक दूसरे युद्ध का बीजा- रोपण हो जाएगा। किसी की हत्या करने वाले को कोई दूसरा हत्या करने वाला मिल ही जाता है, जो किसी को जीतता है, उसे कोई दूसरा जीतने वाला मिल ही जाता है, जो व्यक्ति किसी को लूटता है, उसे कोई दूसरा लूटने वाला मिल ही जाता है।"-बुद्ध. (संदर्भ-डॉ बाबासाहेब अंबेडकर द्वारा लिखित विश्व-विख्यात लोकप्रिय व महान् ग्रंथ-"बुद्ध और उनका धम्म" में वर्णित बुद्ध की धम्म-देशनाएं).



मास्टर शिंगयुन की बुद्ध की शिक्षाएं

आज हम ऐसे समय में रह रहे हैं, जबकि विज्ञान और अर्थव्यवस्था ने इतना धन-दौलत पैदा कर दिया है और ऐसी-ऐसी अद्भुत खोजें कर दी हैं कि यह कल्पना कर पाना कठिन है कि कल क्या होगा ? अपने युग के लाभों का आनंद लेते हुए, हमें यह सोचना होगा कि किस प्रकार ये भौतिक प्राप्तियां विश्व के लोगों के नैतिक व्यवहार को प्रभावित कर रही हैं। संसार इतना पेंचीदा हो गया है कि व्यक्ति अपने यथार्थों को चुनने और निजी अनुभवों के आधार पर वे निजी निर्धारण के तौर पर यह निर्णय कर सकता है कि क्या सही है और क्या गलत हैं? जब लोग खुद यह फैसला कर लेते हैं कि क्या सही है और क्या गलत है, तो वे ऐसे फैसले कर लेते हैं जो उनके लिए और दूसरों के लिए हानिकारक प्रभाव डालने वाले होते हैं।

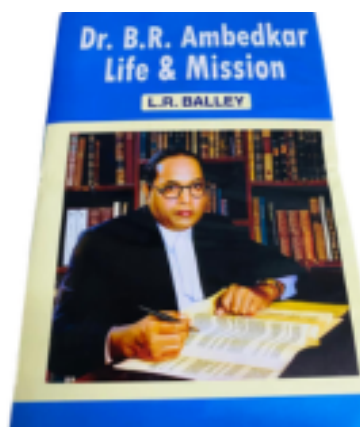
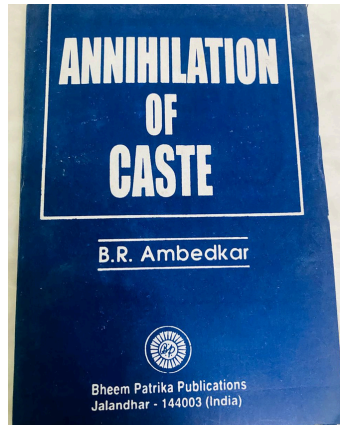
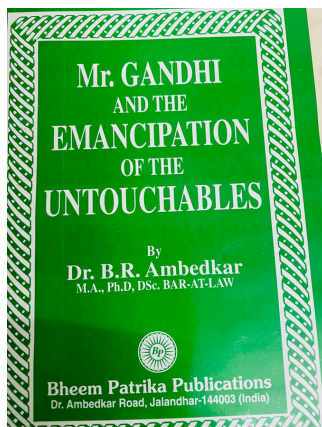
ज्ञान इतना विस्तृत, बहुअंगी व बहुरंगी है कि हमें यह जानना चाहिए कि हम सब कुछ नहीं जानते हैं। सारा ज्ञान उधार में लिया हुआ है, दूसरों से प्राप्त किया है। ऐसे ज्ञान से हम अपने को ज्ञान संपन्न तो बना सकते हैं, परंतु अंदर की अनुभूति नहीं होती है, अतः उससे प्राप्त करो, उस अंतर्मन के दीप को प्रज्ज्वलित करो, प्रकाशित करो। ज्योंही ज्ञान में अपनी अनुभूति जुड़ जाती है, मन की वीणा झंकृत हो उठती है, सारे भाव खत्म हो जाते हैं, व्यक्ति निर्भय हो जाता है। ज्ञान हमेशा ज्ञान का आभास देता है और हमें धोखा होता रहता है कि हम ज्ञान- वान हैं, जब तक उसमें अपना अनुभव, अपनी अनुभूति, अपना अहसास नहीं जुड़ता है, अंतर्दृष्टि पैदा नहीं होती है और इस प्रकार ऐसा ज्ञान हमारी अज्ञानता ही होती है। अज्ञानता के इस आवरण को फेंक दो, अंदर के अंतर्दीप को प्रकाशमान करो।

(संदर्भ-बौद्ध/ अंबेडकरी विद्वान् प्रोफेसर तारारामजी द्वारा रचित जगत प्रसिद्ध व लोकप्रिय महान् ग्रंथ-"धम्मपद- गाथा और कथा" (सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित प्रथम संस्करण 2006 में) एवं बौद्ध/अंबेडकरी व विपस्सी साधक डॉ एम एल परिहार साहब, पाली, जयपुर द्वारा उसे पुनः प्रकाशित (द्वितीय संस्करण 2019) में वर्णित बुद्ध की धम्म- देशनाएं).

...प्रस्तुति- एस आर शौर्य, जोधपुर.



Books in English



Books in Punjabi

ਸੰਸਥਾਪਕ : ਲਾਹੌਰੀ ਰਾਮ ਬਾਲੀ

ਭੀਮ ਪੱਤ੍ਰਿਕਾ

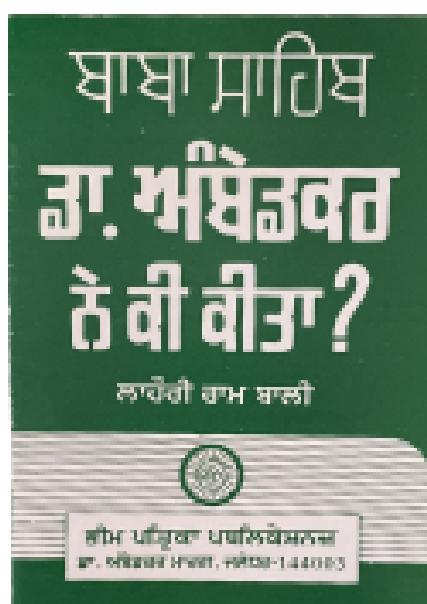
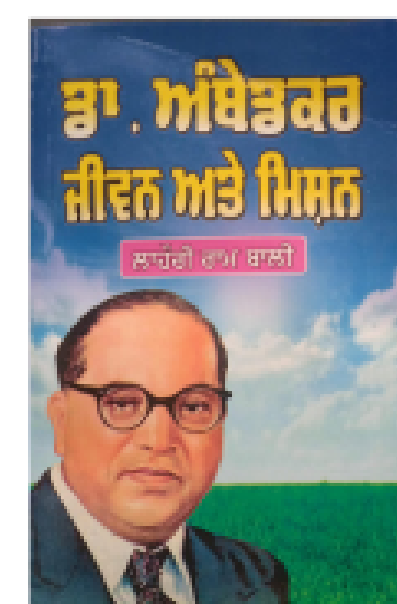
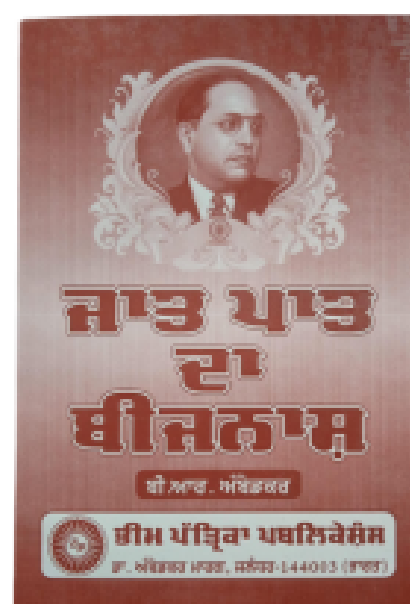
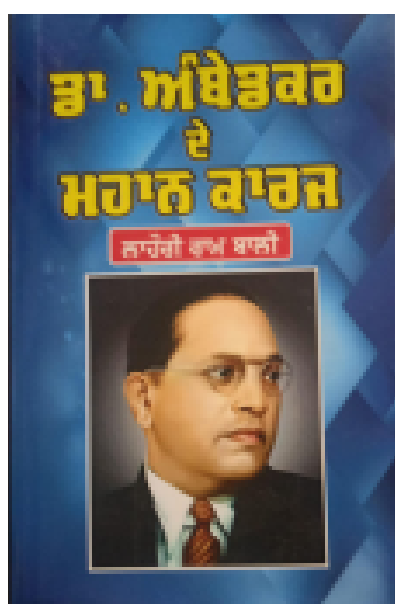
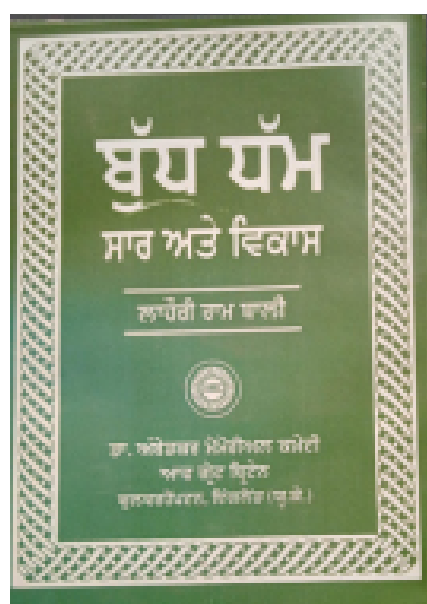
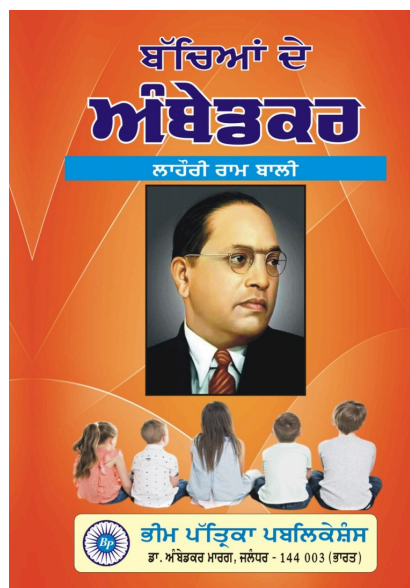
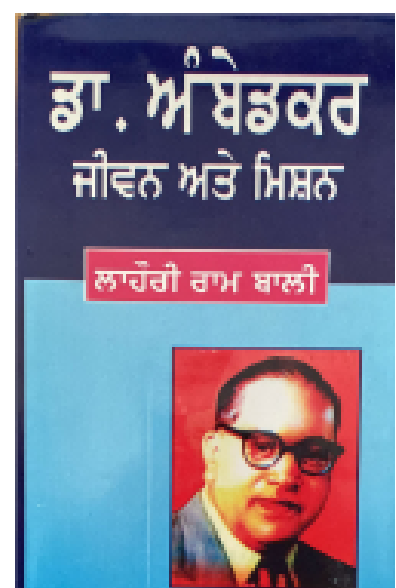
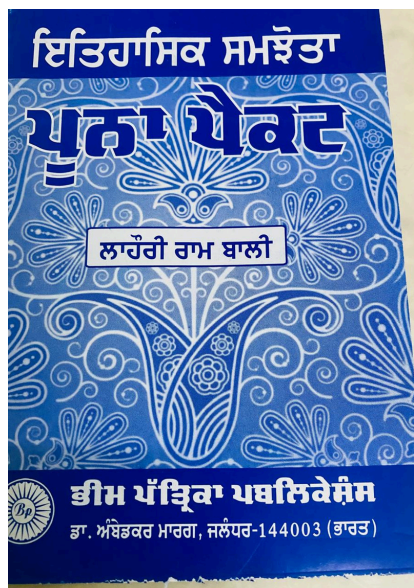
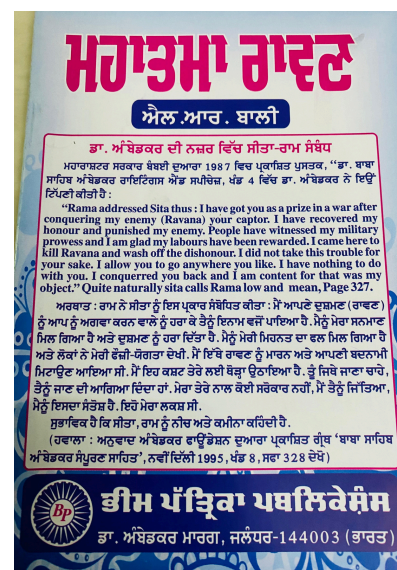
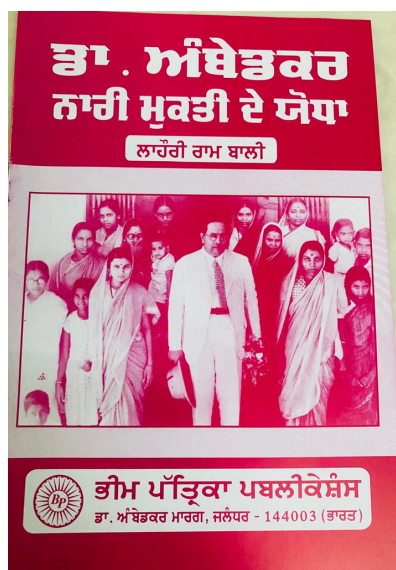
ਪਬਲੀਕੇਸ਼ਨਸ, ਜਲੰਧਰ।

ਭੀਮ ਪਤ੍ਰਿਕਾ ਪਬਲਿਕੇਸ਼ਨਸ

BHEEM PATRIKA PUBLICATIONS

ES-393-A, Street No. 6, Abadpura, Jalandhar-144003

Mob.: 96671-01963



Disclaimer

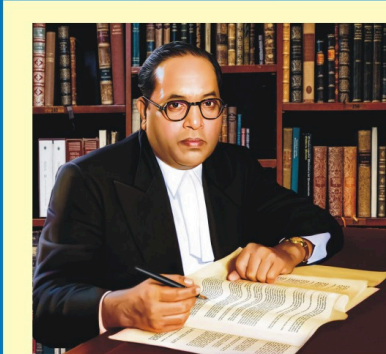
Views expressed in the article are personal" means that the opinions and perspectives presented within the article belong solely to the author and do not necessarily reflect the views of Bheem Patrika . it's a disclaimer stating that the writer is expressing their own personal thoughts and not speaking on behalf of anyone else.



Book in GERMAN

Dr. B.R. Ambedkar Leben & Mission

L.R. BALLEY



"Menschen sind sterblich. Ideen auch. Eine Idee muss genauso ausgebreitet werden, Wie eine Pflanze geogossen werden muss. Andernfalls werden beide verwelken und sterben."
-Bodhisattva Dr. B.R. Ambedkar



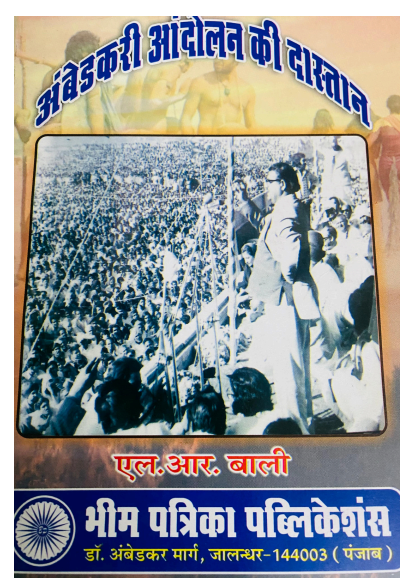
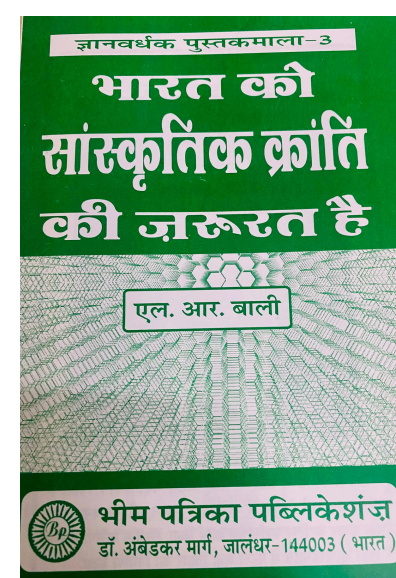
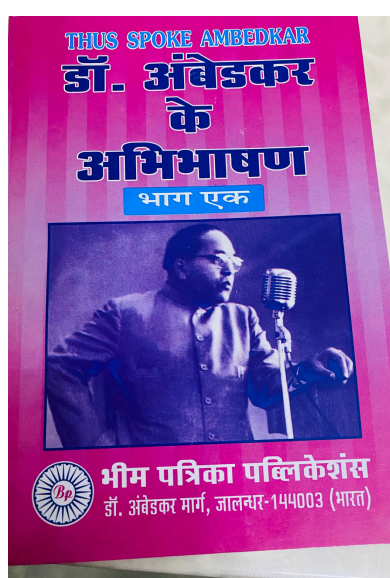
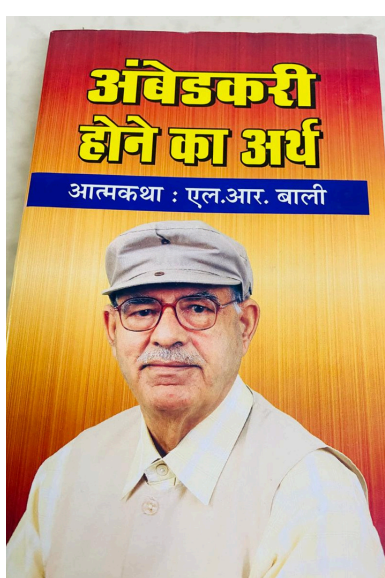
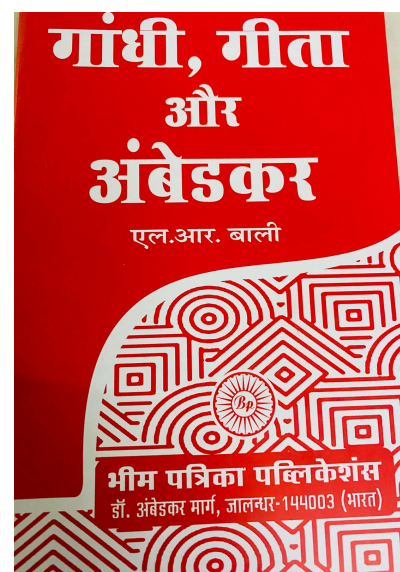
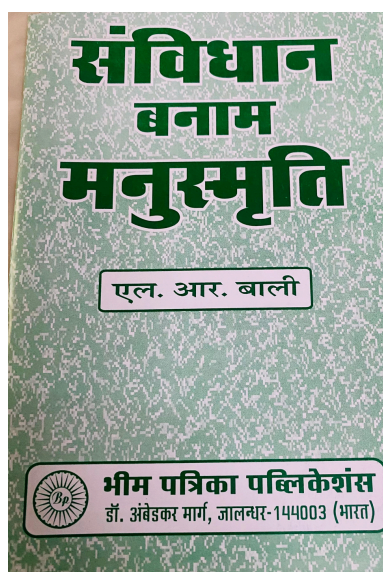
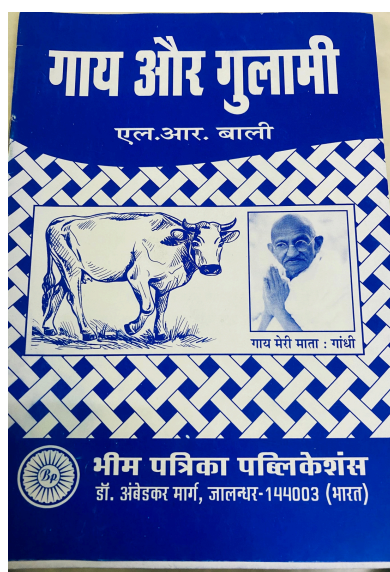
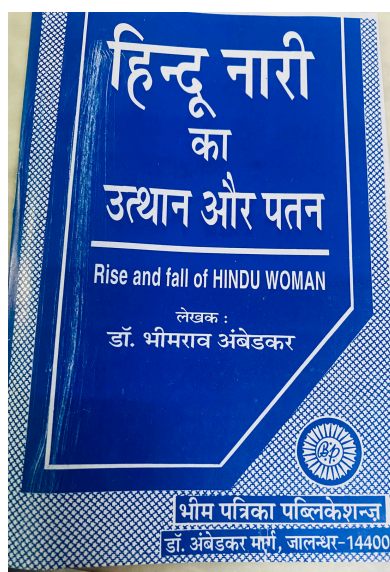
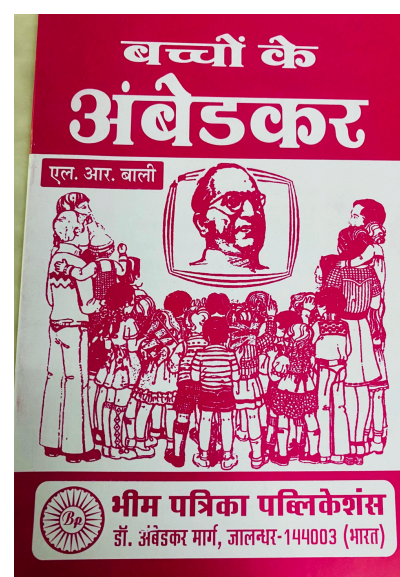
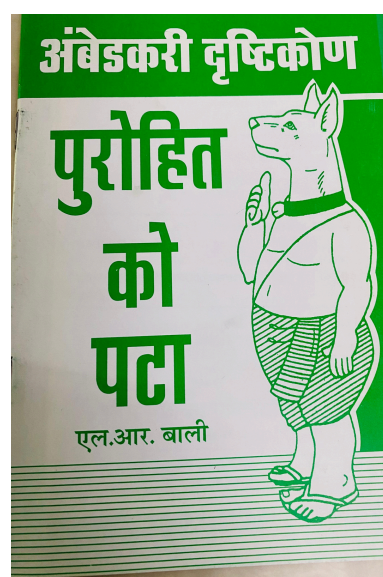
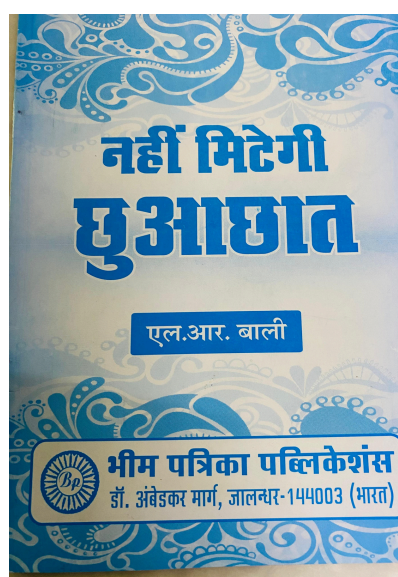
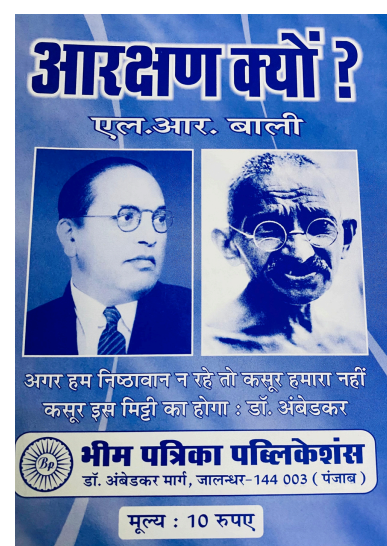
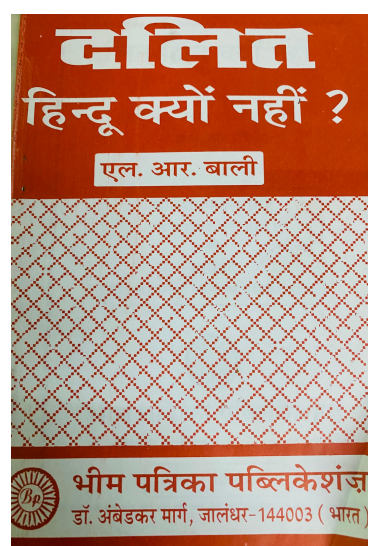
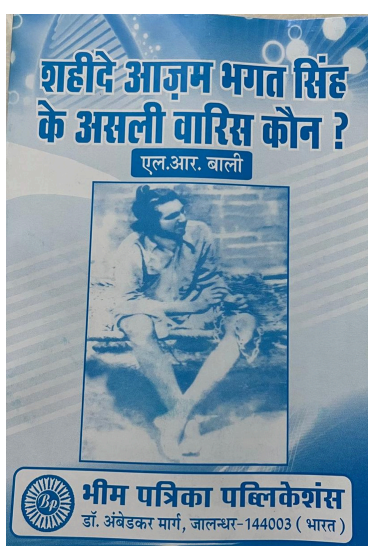
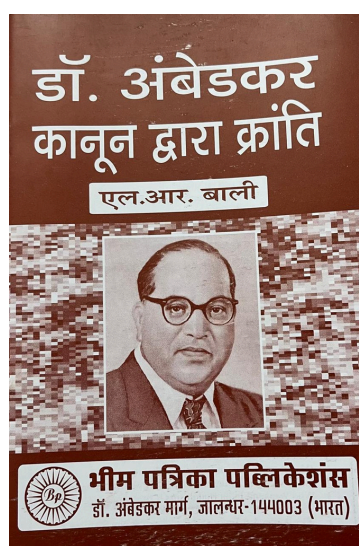
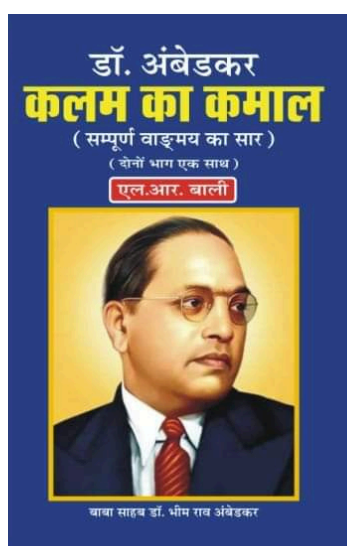
Dr. Ambedkar Mission Society Europe
Germany
ritesh.kadbe@gmail.com
square_aman@yahoo.com

L.R. Balley

Autor

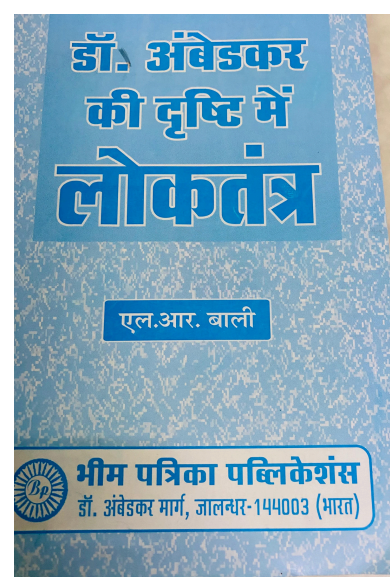
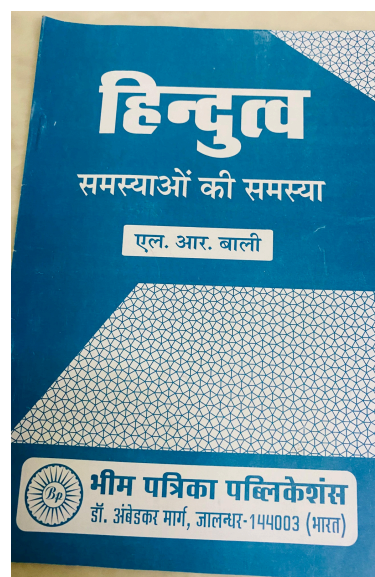
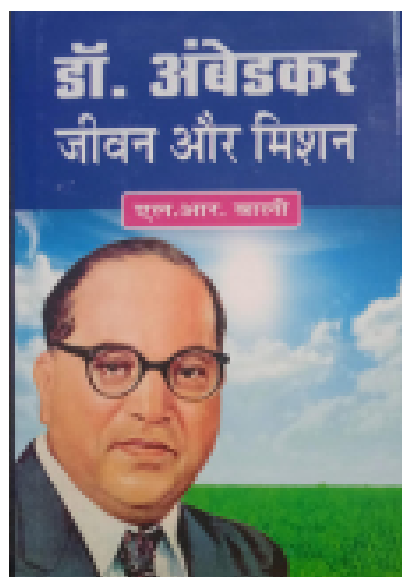
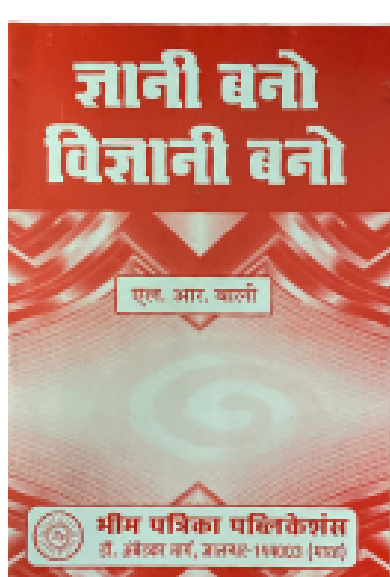
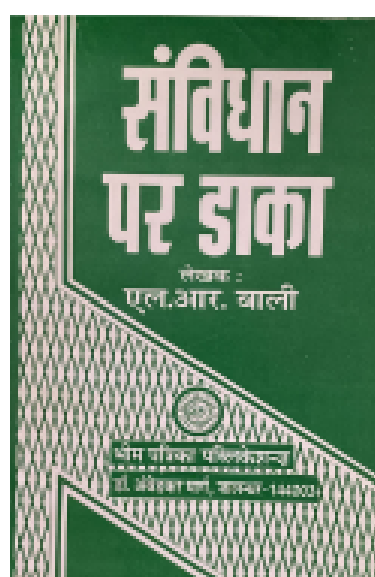
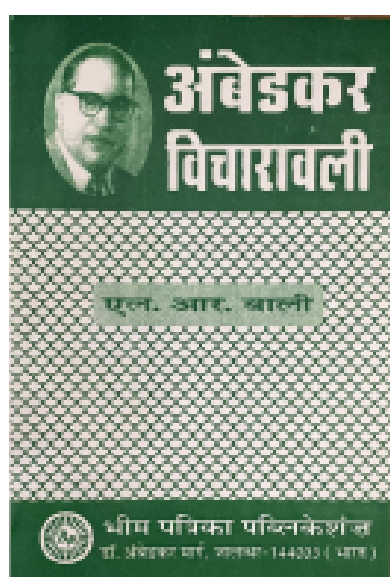
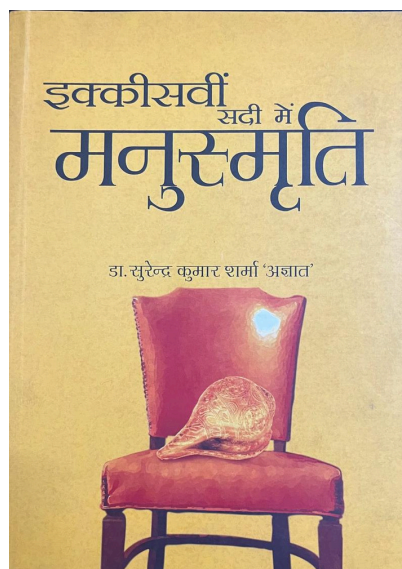


Books in Hindi





Books in Hindi



Contact Us:

Bheem Patrika Publications

ES-393-A, Abadpura,
Jalandhar city
Distt. Jalandhar 144003

Mob. - +91 - 96671 01963
E-mail - rkumar1100e@gmail.com
Web. - <https://bheempatrika.in>

अस्वीकरण

लेख में व्यक्त विचार व्यक्तिगत हैं" का अर्थ है कि लेख के भीतर प्रस्तुत राय और दृष्टिकोण पूरी तरह से लेखक के हैं और जरूरी नहीं कि भीम पत्रिका के विचारों को प्रतिबिंबित करें। यह एक अस्वीकरण है जिसमें कहा गया है कि लेखक अपने निजी विचार व्यक्त कर रहे हैं और किसी और की ओर से नहीं बोल रहे हैं।